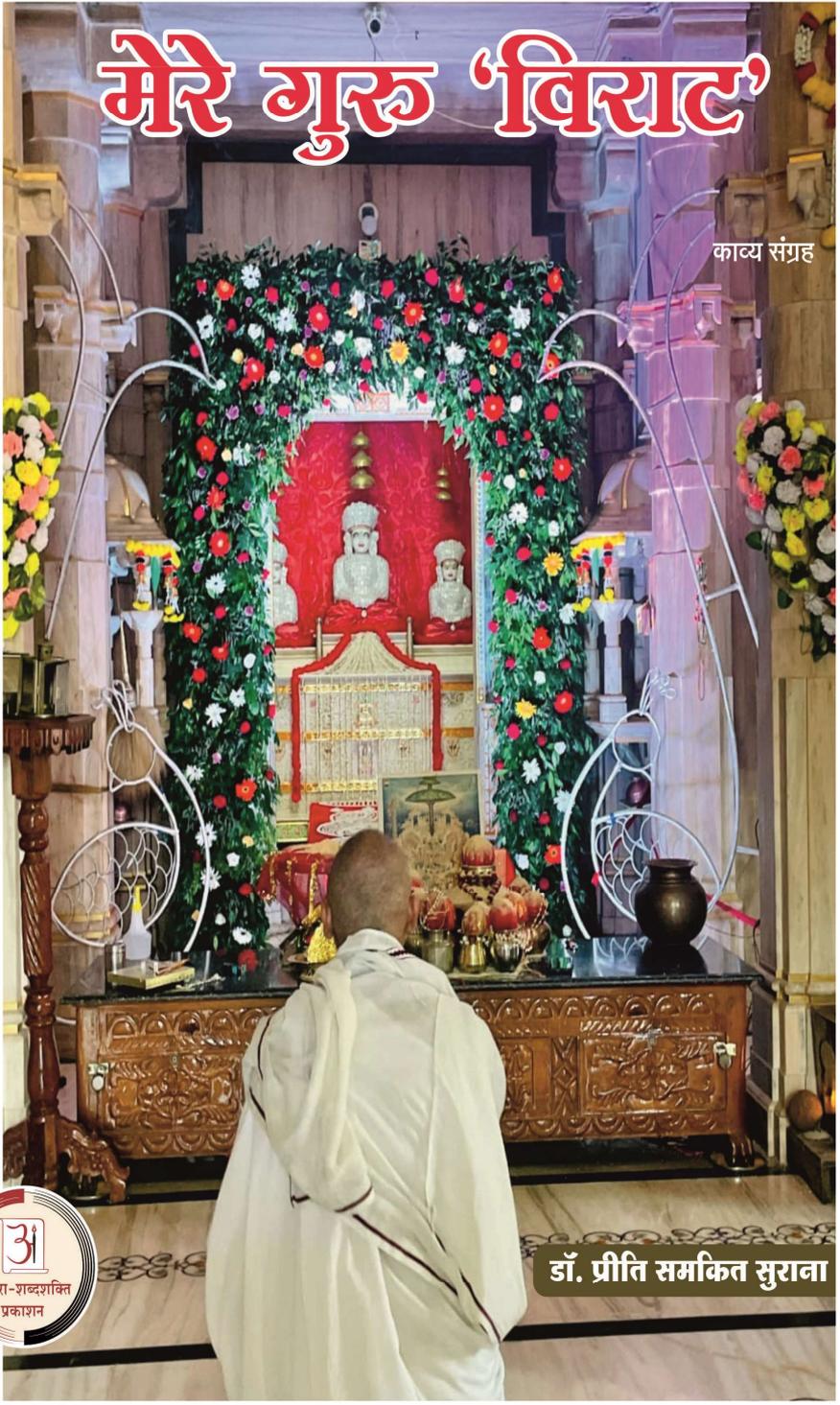


मेरे गुरु 'विराट'

काव्य संग्रह



डॉ. प्रीति समकित मुराना

मेरे गुरु 'विराट'

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)



Antra Shabdshakti Prakeshan

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2025, डॉ. प्रीति समकित सुराना

मुद्रक- सोनी कम्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR. PRITI SAMKIT SURANA

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

जीवन की हर यात्रा में एक ऐसा क्षण अवश्य आता है, जब बाहरी हलचल के मध्य भीतर कोई गहन स्थिरता जन्म लेती है। विचारों की दौड़ जैसे धीरे-धीरे थमने लगती है, प्रश्नों के उत्तर शब्दों से नहीं — अनुभूतियों से मिलने लगते हैं।

ऐसे ही एक मौन क्षण में, गुरु की विराट चेतना का स्पर्श हुआ — एक ऐसा स्पर्श, जिसने दृष्टि को भीतर की ओर मोड़ दिया।

गुरु केवल एक व्यक्तित्व नहीं होते;
वे वह सजीव चेतना हैं जो साधक के अंतर्मन में दिशा की रेखाएँ उकेरती है।
वे मार्ग दिखाते नहीं — दृष्टि परिवर्तित करते हैं;
थोपते नहीं — आत्मबल जगाते हैं;
बंधन नहीं देते — स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं।

इस संकलन की प्रत्येक रचना एक साधक-भाव के अंतर से उपजी अनुभूति है — जहाँ समर्पण है, कृतज्ञता है, साधना है, और गहन परिवर्तन भी।

इन कविताओं में किसी स्त्री या पुरुष की वाणी नहीं, एक चेतना की निरपेक्ष भावना की प्रतिध्वनि है, जो गुरु की विराट सत्ता के सान्निध्य में स्वयं को पहचानती है।

“मेरे गुरु ‘विराट’” केवल एक शीर्षक नहीं, यह आस्था, धर्म, साधना और अंतःदृष्टि के गहन अनुभव का सजीव संकलन है। प्रत्येक कविता में उस मौन प्रेरणा की झलक है, जिसने भ्रम की परतों को हटाकर भीतर के प्रकाश को प्रकट किया।

यह संकलन समर्पित है —

उन गुरुचरणों को, जिन्होंने इस चेतना में संयम, स्पष्टता और आत्मबल की ज्योति प्रज्वलित की।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

| | |
|---|----|
| 1. विराट उपस्थिति का आलोक | 5 |
| 2. पहली दृष्टि : चेतना का जागरण | 6 |
| 3. धर्म का जीवंत स्पंदन | 7 |
| 4. मौन में दिशा की रेखाएँ | 8 |
| 5. साधना का प्रथम स्पर्श | 9 |
| 6. भीतर का उजास | 10 |
| 7. आत्मविश्वास की अविरल धारा | 11 |
| 8. श्रद्धा की जड़ें : धर्म का अंकुरण | 12 |
| 9. शांति का केंद्रबिंदु | 13 |
| 10. आत्मा की दिशा : प्रकाश का मार्ग | 14 |
| 11. संयम — मुक्त जीवन की लय | 15 |
| 12. अंतर की पदचाप | 16 |
| 13. आत्मनिर्भरता : अंतःबल का संबल | 17 |
| 14. समर्पण — अहंकार से परे | 18 |
| 15. सत्य की ज्योति : स्पष्टता का आलोक | 19 |
| 16. अहिंसा की नमी : संवेदना का स्पर्श | 20 |
| 17. विवेक — निर्णय का नाभिक | 21 |
| 18. क्षमा का शांत सरोवर | 22 |
| 19. प्रतिक्रमण की संध्या : आत्मावलोकन की वेला | 23 |
| 20. अपरिग्रह — सहजता का विस्तार | 24 |
| 21. अध्ययन से प्रबोध : ज्ञान का जागरण | 25 |
| 22. धैर्य की रागिनी | 26 |
| 23. मोक्षमार्ग — वर्तमान का विधान | 27 |
| 24. आभार सहित समर्पण | 28 |

1. विराट उपस्थिति का आलोक

आपकी विराट उपस्थिति में
चेतना की परतें स्वतः खुलने लगती हैं।
शब्द मौन में ढल जाते हैं,
दृष्टि भीतर की ओर मुड़ती है।

बाहर का कोलाहल शांत होकर
एक अंतरंग गहराई में ठहरता है।
आप कोई भौतिक दृश्य नहीं,
एक अखंड अनुभूति हैं —
जो हर श्वास में स्थिर रहती है।

गमन रुकता नहीं,
पर दिशा अब भटकती नहीं।
आस्था कोई बौद्धिक विचार नहीं,
एक जीवित अनुभव बन जाती है।

आपका मौन अंतरंग दिशा रेखाएँ रचता है,
बिना बोले भी मोक्षमार्ग स्पष्ट होता है।
भीतर का अज्ञात भय गलने लगता है,
आत्मविश्वास धीरे-धीरे आकार लेता है।

आपके सान्निध्य में
बाहरी आश्रय नहीं, आत्मबल जागता है।
एकाकीपन की धुंध में
आपकी शांति ज्ञान-दीप बनकर जलती है।

यहीं से आत्म-यात्रा आरम्भ होती है —
अंदर की, स्पष्ट, शांत, अडिग।

2. पहली दृष्टि : चेतना का जागरण

पहली बार जब चेतना आपके सान्निध्य को छूती है,
तो कोई शोर नहीं उठता,
बस भीतर एक सूक्ष्म कंपन फैलता है।

साधक-भाव वर्षों की भटकन के बाद
मानो अपना अविचल केंद्र पा लेता है।
वाणी मौन में ठहरती है,
और नयनों में एक नई, निर्मल दृष्टि आकार लेती है।

आप कोई बाहरी घोषणा नहीं करते,
पर जीवन की परिभाषाएँ स्वयं बदलने लगती हैं।
प्रश्न वही रहते हैं,
पर अब अनुभवयुक्त उत्तर भीतर से प्रकट होते हैं।

गहन अनुभूतियों की परतें खुलती जाती हैं,
और हर परत में श्रद्धा का एक बीज मिलता है।
यह मिलन आकस्मिक नहीं, अनिवार्य प्रतीत होता है।
जैसे काल ने स्वयं यह क्षण गढ़ा हो।

आपके सामने खड़े होकर
स्वयं की अनकही वास्तविकताएँ उजागर होती हैं।
उस एक शांत दृष्टि में
आत्मा अपनी अनंत संभावनाओं को पहचान लेती है।

और यहीं से श्रद्धा की पहली ज्योति जलती है —
शांत, स्थिर, साक्षी बनकर।

3. धर्म का जीवंत स्पंदन

आप धर्म को बोलते नहीं,
धर्म आपमें स्पंदित होता है।
आपके समीप आकर
शब्दों से अधिक निःशब्दता बोलती है।

ग्रंथों में जो सिद्धांत हैं,
वे आपके सहज आचरण में जीवित हो उठते हैं।
आस्था कोई परंपरा नहीं रहती,
जीवन की धड़कन बन जाती है।

आपका एक मौन संकेत भी
अनगिनत मानसिक प्रश्नों को शांत कर देता है।
जहाँ मतभेद होते हैं,
वहाँ आप समता का मार्ग दिखाते हैं।

धर्म का अर्थ अब नियम नहीं,
आत्मा की सहज वीतरागता बन जाता है।
आप उपदेश नहीं देते,
शांत जीवन की शैली गढ़ते हैं।

आपके बाहरी स्पर्श से नहीं,
आपकी उपस्थिति से ही गहन परिवर्तन घटता है।
सत्य और अहिंसा अब मान्य विचार नहीं,
जीवन की आधारशिला बन जाते हैं।

आप वह ज्ञान सेतु हैं —
जहाँ विचार साधना में बदल जाता है।

4. मौन में दिशा की रेखाएँ

जब मार्ग अज्ञान से धुंधला होता है,
तो आपके मौन में दिशा स्पष्ट हो जाती है।
न कोई आदेश, न बाहरी संकेत —
बस दृष्टि में निहित स्थिरता
पथप्रदर्शक बन जाती है।

भीतर की असमंजस
शांत गहराई में ढलती है।
आप दिशा देते नहीं,
दिशा बनकर अविचल खड़े रहते हैं।

साधक-भाव की गति स्वयं ही
उस ओर अनायास मुड़ जाती है।
हर मोड़ पर, हर आंतरिक प्रश्न में
आपकी उपस्थिति मार्ग प्रकाशित करती है।

आपका मौन मानो चेतना का मानचित्र हो —
जो भीतर से सही पथ उकेरता है।
अब निर्णय बाहर से नहीं आते,
अंतरंग केंद्र से उठते हैं।

आप वह अविचल केंद्र हैं
जहाँ भटकन ठहरकर सुव्यवस्थित यात्रा बन जाती है।
आपकी दिशा में चलते हुए
हर कदम स्थिरता में डूब जाता है।

5. साधना का प्रथम स्पर्श

आपके सान्निध्य में
साधना कोई अनुष्ठान नहीं,
जीवन की आंतरिक लय बन जाती है।

श्वास में संयम उतरता है,
विचारों में स्पष्टता आती है।
जितना बाहर शांत होता है,
उतना ही भीतर का सूक्ष्म शोर सुनाई देने लगता है।

आप साधना सिखाते नहीं,
उसका ऊर्जावान वातावरण रचते हैं।
जहाँ मन स्वतः सजग होने लगता है।
क्रोध की लहरें मंद पड़ती हैं,
लोभ के तंतु ढीले हो जाते हैं।

आत्मा अपनी गहनता में उतरना प्रारंभ करती है।
यह साधना न नियमों में बंधी है,
न प्रदर्शन की प्रतीक्षा में।

यह भीतर की नमी से सहजता से अंकुरित होती है।
आप वह शांत छाया हैं
जिसके नीचे साधना की भूमि उर्वर हो जाती है।
यहीं से परिवर्तन की यात्रा शुरू होती है —
शांत, गहन, दीर्घ।

6. भीतर का उजास

आपके मौन की परतों में
एक अदृश्य, तीक्ष्ण प्रकाश बसा है।
जो शब्दों से परे
चेतना के गहन कोनों को छूता है।

वर्षों के अज्ञान में
यह उजाला धीरे-धीरे उतरता है।
किसी बाहरी उपदेश की आवश्यकता नहीं होती,
बस आपकी अखंड उपस्थिति ही पर्याप्त होती है।
भीतर की गाँठें बिना प्रयास खुलने लगती हैं।

मन का कोलाहल
प्रकाश के सामने टिक नहीं पाता।
आप दीपक नहीं जलाते,
प्रकाश भीतर से स्वयं प्रकट होता है।

यह वही जागृति का क्षण है
जब देही दर्शक से साधक बनता है।
बाहर की माया मिटती नहीं,
पर उनका भय समाप्त हो जाता है।

आप वह अखंड उजाला हैं
जो भीतर की आँखें खोल देता है।
यहीं से आत्म-प्रत्यय जन्म लेता है।

7. आत्मविश्वास की अविरल धारा

आपके सान्निध्य में
आत्मविश्वास किसी उपदेश से नहीं,
गहन अनुभव से जन्म लेता है।
हर ठहराव में एक नई गति मिलती है,
हर भीतरी भय में एक नई शक्ति का बोध होता है।

आप बाहरी सहारा नहीं बनते,
सहज आत्मबल जगाते हैं।
जहाँ पहले संदेह था,
वहाँ अब स्पष्टता बहने लगती है।
निर्णय थोपे नहीं जाते,
अंतरंग प्रेरणा से उठते हैं।

यह आत्मविश्वास
आपके शब्दों का नहीं,
आपकी दृष्टि का प्रसाद है।
जो भयभीत चेतना को
स्थिरता का आस्वादन कराता है।
अब निर्भरता कम होती है,
आत्मबल बढ़ता है।

आपके समीप आने से
स्वयं पर विश्वास गहराता है।
और यही विश्वास
मुक्ति की दिशा में पहला अडिग कदम बन जाता है।

8. श्रद्धा की जड़ें : धर्म का अंकुरण

धर्म कोई बाहरी विधान नहीं,
आपके माध्यम से वह भीतर उतरता है।
जैसे वर्षा की नमी से
मिट्टी में जड़ें फैलती हैं,
वैसे ही आपकी उपस्थिति से
आत्मा में श्रद्धा की जड़ें गहराती हैं।

संघर्ष मिटते नहीं,
पर उनका अर्थ बदल जाता है।
भटकाव समाप्त नहीं होता,
पर केंद्र की पहचान हो जाती है।
आप धर्म को प्रचारित नहीं करते,
जीवित करते हैं।

जहाँ आप होते हैं,
वहाँ वाणी की नहीं, जीवन की गूँज सुनाई देती है।
यह धर्म बाहरी रूप नहीं,
अंतरंग का स्थायित्व बन जाता है।
और यहीं से साधक-भाव की साधना
अपनी गहन जड़ों को पहचानने लगती है।

आप वह पवित्र नमी हैं
जिससे आत्मा की भूमि में हरियाली लौट आती है।

9. शांति का केंद्रबिंदु

आपके सान्निध्य में
शांति कोई प्रयत्न नहीं, सहज स्थिति बन जाती है।
मन के उथले तरंगों पर
दृष्टि गहनता की ओर मुड़ती है।

जहाँ शोर था,
वहाँ अब भीतर सुनने की क्षमता जन्म लेती है।
आप न बोलकर भी
जीवन की दिशा समझा देते हैं।

विचारों का कोलाहल
आपकी मौन दृष्टि में धीमा हो जाता है।
यह शांति बाहर नहीं,
भीतर की परतों में उतरती है।

आपके समीप रहकर
अंतरंग का केंद्र स्पष्ट होने लगता है।
बिखराव थमता है,
एकाग्रता स्फुरित होती है।

आप कोई सीमाएँ नहीं बनाते,
पर हर सीमा अपने आप पहचान में आने लगती है।
यह शांति स्थिर नहीं,
जीवंत है —
हर निर्णय में, हर अनुभव में
एक मौन साक्षी की तरह प्रवाहित होती है।

10. आत्मा की दिशा : प्रकाश का मार्ग

जब मार्गों पर अज्ञान की धुंध छा जाती है,
आपका मौन ही सबसे उजला पथदर्शक बनता है।
न कोई इशारा, न बाहरी संकेत —
पर दिशा भीतर से खुलने लगती है।
संभावनाओं का प्रकाश
अज्ञान की परतें हटाता है।

आप दिशा दिखाते नहीं,
दृष्टि को नया कोण दे देते हैं।
वहीं से राह स्वयं निर्मित होने लगती है।
अनिर्णय की स्थिति
स्पष्टता में परिवर्तित होती है।
यह दिशा बाहर नहीं,
आत्मा की गहराई से जन्म लेती है।

आप वह क्षण रचते हैं
जहाँ संदेह पिघलने लगता है।
हर कदम के साथ
एक स्थिर विश्वास जन्म लेता है।
आपका सान्निध्य मानो वह दीपक है
जो यात्रा की नहीं, यात्री की आँखों में रोशनी भर देता है।

11. संयम — मुक्त जीवन की लय

आपके मार्ग में
संयम कोई बंधन नहीं,
मुक्त जीवन की लय बन जाता है।
आवेगों की आँधी में
आपकी दृष्टि शांति की तरह उतरती है।

वासनाओं की परतें
धीरे-धीरे पिघलती जाती हैं।
आप दमन नहीं सिखाते,
सजगता सिखाते हैं।
जहाँ भाव आते हैं,
वहीं उन्हें पहचानने की दृष्टि भी मिलती है।

यह साधना नियमों में नहीं बंधती,
जीवन के हर क्षण में समाहित होती है।
क्रोध, मोह, अहंकार —
इनका अस्तित्व मिटता नहीं,
पर उनका प्रभाव क्षीण होता जाता है।

आप वह दर्पण हैं
जिसमें आत्मा स्वयं को स्पष्ट देख पाती है।
संयम तब बोझ नहीं,
मुक्ति का सेतु बन जाता है।

12. अंतर की पदचाप

आपके संग

चेतना की यात्रा बाहर से भीतर की ओर मुड़ जाती है।

जहाँ पहले दृष्टि जगत की ओर थी,

अब आत्मा की ओर केंद्रित होती है।

प्रश्न वही हैं,

पर उत्तर अब मौन से जन्म लेते हैं।

भीतर उतरते ही

सतह पर बिखरी चीज़ें अर्थ खो देती हैं।

जो कभी महत्वपूर्ण लगता था,

वह अब गहराई के आगे फीका पड़ जाता है।

आप भीतर जाने का मार्ग नहीं बताते,

बस चेतना का द्वार खोल देते हैं।

वहीं से साधक-भाव अपनी राह खोज लेता है।

यह यात्रा किसी चमत्कार से नहीं,

अंतर की सरलता से घटती है।

आपके सान्निध्य में

मन दर्शक से साधक बन जाता है।

और आत्मा अपने ही विस्तार को पहचानने लगती है।

13. आत्मनिर्भरता : अंतःबल का संबल

आपके सान्निध्य में
सहारा लेने की प्रवृत्ति
धीरे-धीरे आत्मबल में रूपांतरित होती है।
जहाँ पहले मन थमता था,
अब स्वयं खड़ा होना सीखता है।

आप न थामते हैं, न रोकते हैं,
बस भीतर वह शक्ति जागृत कर देते हैं
जो निर्भरता की दीवारों को गिरा देती है।
अब निर्णय बोझ नहीं, अवसर बनते हैं।
प्रश्नों से भय नहीं, खोज आरंभ होती है।

यह संबल आपका दिया नहीं,
आपके मौन में निहित वह प्रेरणा है
जो साधक-भाव के भीतर
सामर्थ्य का दीपक जलाती है।
अब हर ठोकर नई समझ लेकर आती है।

आपकी दृष्टि में खड़े होकर
स्वयं को संभालना स्वभाव बन जाता है।
यही आत्मनिर्भरता
वास्तविक शरण का रूप है —
जहाँ कोई बाहरी पकड़ नहीं,
फिर भी संबल सदा उपस्थित रहता है।

14. समर्पण — अहंकार से परे

आपके प्रति समर्पण कोई घोषणा नहीं,
अंतर्मन का सहज झुकाव है।
जहाँ अहंकार स्वयं पिघलकर
श्रद्धा की निर्मल धार में विलीन हो जाता है।

यह समर्पण न डर से उपजता है,
न किसी अपेक्षा से,
बल्कि उस गहन अनुभूति से
जिसमें गुरु विराट चेतना बनकर प्रकट होते हैं।

आप किसी अधिकार से नहीं,
उपस्थिति से वश में करते हैं।
वाणी मौन में ढलती है,
और चेतना नम्रता में।

यह समर्पण सिर झुकाने का नहीं,
भीतर से खुल जाने का भाव है।
जहाँ साधक अपने समस्त बोझ छोड़कर
आस्था की सरल भूमि पर ठहर जाता है।

यहीं से आत्मा की साधना प्रगाढ़ होती है —
शांत, निर्मल, निर्भय।

15. सत्य की ज्योति : स्पष्टता का आलोक

आपके सान्निध्य में
सत्य कोई विचार नहीं,
जीवित अनुभव बन जाता है।

जहाँ भ्रम की परतें थीं,
वहाँ दृष्टि स्पष्टता से चमक उठती है।
आप सत्य को परिभाषित नहीं करते,
उसे जीने की कला सिखाते हैं।

आपकी उपस्थिति में
असत्य टिकता नहीं, स्वयं ढह जाता है।
यह ज्योति बाहर से नहीं आती,
भीतर से सहज प्रकट होती है।

जैसे अंधकार हटते ही
दीपक अपने आप दिखने लगता है।
आप सत्य को सिद्ध नहीं करते,
प्रकट कर देते हैं।

और यही प्रकाश
जीवन के हर निर्णय में मार्गदर्शक बन जाता है।

16. अहिंसा की नमी : संवेदना का स्पर्श

आपके निकट

अहिंसा कोई नियम नहीं,
जीवन की सहज नमी बन जाती है।
विचारों की कठोरता पिघलती है,
वाणी की तीक्ष्णता कोमल होती है।

आप दमन नहीं सिखाते,
संवेदना जगाते हैं।
जहाँ पहले प्रतिक्रिया थी,
अब गहन समझ जन्म लेती है।

आपका आचरण ही उपदेश है —
जहाँ क्रोध शांति में,
और विरोध समता में रूपांतरित होता है।
यह नमी आत्मा को सींचती है,
और संबंधों में सौम्यता भर देती है।

आप अहिंसा को पढ़ाते नहीं,
जीवन में प्रवाहित कर देते हैं।
यही प्रवाह साधना का मूल बन जाता है।

17. विवेक — निर्णय का नाभिक

आपके मार्गदर्शन में
विवेक कोई शुष्क तर्क नहीं,
जीवन का अंतरंग आधार बन जाता है।
भावनाएँ दिशा खोती नहीं,
धुरी पर टिक जाती हैं।

आप निर्णय नहीं सुनाते,
भीतर वह दृष्टि देते हैं
जो सही और असत्य को स्वयंस्फूर्त पहचान लेती है।
यह विवेक भय पर नहीं,
आत्मज्ञान पर टिका होता है।

हर उलझन में
आपका मौन एक आधार रेखा बनता है।
वहीं से निर्णयों की स्पष्टता जन्म लेती है।
आप विवेक का बीज नहीं बोते,
चेतना की भूमि को उपजाऊ बना देते हैं।

यहीं से जीवन निर्णयों में उलझता नहीं,
बल्कि निखरता है।

18. क्षमा का शांत सरोवर

आपके सान्निध्य में
क्षमा कोई औपचारिकता नहीं,
अंतर की सहज गहराई बन जाती है।
जहाँ पहले प्रतिक्रिया थी,
अब शांति का सरोवर फैलता है।

आप किसी को क्षमा करने को नहीं कहते,
ऐसा वातावरण रचते हैं
जहाँ क्रोध ठहर नहीं पाता।
दृष्टि दोष पर नहीं,
शुद्ध स्वभाव पर टिकती है।

यह क्षमा आत्मा को हल्का करती है,
बंधन ढीले पड़ते हैं।
आपके माध्यम से
क्षमा कोई शब्द नहीं,
आंतरिक विस्तार बन जाती है।

यहीं से संबंधों में नई ताजगी आती है,
और जीवन का प्रवाह सरल होता है।

19. प्रतिक्रमण की संध्या : आत्मावलोकन की वेला

आपके प्रेरणा पथ पर
प्रतिक्रमण कोई कर्मकांड नहीं लगता,
आत्मा की सांध्य वेला बन जाती है।
जहाँ दिनभर के विचार, वचन, कर्म
शांत चित्त से देखे जाते हैं।

आप आत्मावलोकन का भाव जगाते हैं,
जहाँ दोषों से भागा नहीं जाता,
उन्हें नम्रता से स्वीकारा जाता है।
यह संध्या किसी घड़ी पर नहीं,
चेतना के क्षण पर टिकी होती है।

आप प्रतिक्रमण को भय नहीं,
मुक्ति का द्वार बना देते हैं।
वहीं से क्षमा, संयम और सुधार की धारा बहती है।
आप सिखाते नहीं,
दिशा में स्थिर खड़े रहते हैं —
और साधक-भाव स्वयं लौट आता है।

20. अपरिग्रह — सहजता का विस्तार

आपके पथ पर
अपरिग्रह कोई त्याग नहीं,
स्वाभाविक हल्कापन बन जाता है।
जहाँ पहले संचय था,
वहाँ अब मुक्त प्रवाह है।

आप पकड़ने या छोड़ने को नहीं कहते,
पकड़ के बोझ को दिखा देते हैं।
वहीं से स्वतः ढीलापन आ जाता है।
यह हल्कापन बाहर का नहीं,
भीतर के बंधनों का होता है।

आप सिखाते हैं
कि जितना त्यागा जाए,
उतना आत्मा विस्तृत होती है।
अब भार नहीं,
एक अखंड सहजता साथ चलती है।

अपरिग्रह साधना नहीं,
जीवन का स्वभाव बन जाता है।

21. अध्ययन से प्रबोध : ज्ञान का जागरण

आपके मार्ग में
अध्ययन केवल पढ़ना नहीं,
जीवन को देखना सीखना है।
हर शब्द एक दर्पण बनता है,
जिसमें स्वयं को देखा जाता है।

आप ग्रंथ खोलने को नहीं कहते,
भीतर की दृष्टि खोल देते हैं।
वहीं से अर्थ सहज भीतर उतरने लगता है।
आप ज्ञान नहीं देते,
ज्ञान का द्वार खोलते हैं।

साधक को अब बाहर समझ नहीं ढूँढनी पड़ती,
भीतर अर्थ झलकने लगता है।
यह अध्ययन मौन में भी चलता है —
क्योंकि आप स्वयं एक जीवित ग्रंथ की तरह हैं।

22. धैर्य की रागिनी

आपके समीप
धैर्य कोई मानसिक प्रयास नहीं,
अंतर की रागिनी बन जाता है।
जहाँ जल्दबाज़ी थी,
वहाँ अब स्थिरता है।

आप समय को नहीं थामते,
चेतना को वर्तमान में स्थिर कर देते हैं।
वहीं से प्रतीक्षा तप नहीं, आनंद बन जाती है।
धैर्य कोई बोझ नहीं,
जीवन की लय है।

आपके सान्निध्य में
हर क्षण परिपक्व होता है।
यहीं से आत्म-यात्रा गहरी और शांत होती जाती है।

23. मोक्षमार्ग — वर्तमान का विधान

आपके पथ पर
मोक्ष कोई दूर का गंतव्य नहीं,
वर्तमान का विधान बन जाता है।
हर क्षण में मुक्ति की संभावना खुलती है।

आप भविष्य का वादा नहीं करते,
वर्तमान की स्पष्ट दृष्टि देते हैं।
वहीं से बंधन ढीले पड़ते हैं।
जहाँ पहले मोह था,
वहाँ अब साक्षीभाव है।

मोक्ष कोई अंतिम गंतव्य नहीं,
जीवित साधना की चरम स्थिति है।
आप वह जागरूक क्षण रचते हैं
जहाँ वर्तमान ही मुक्ति का द्वार बन जाता है।

24. आभार सहित समर्पण

आपके विराट स्वरूप के समक्ष
शब्द ठहर जाते हैं।
जो कहा जा सके, वह छोटा पड़ जाता है।

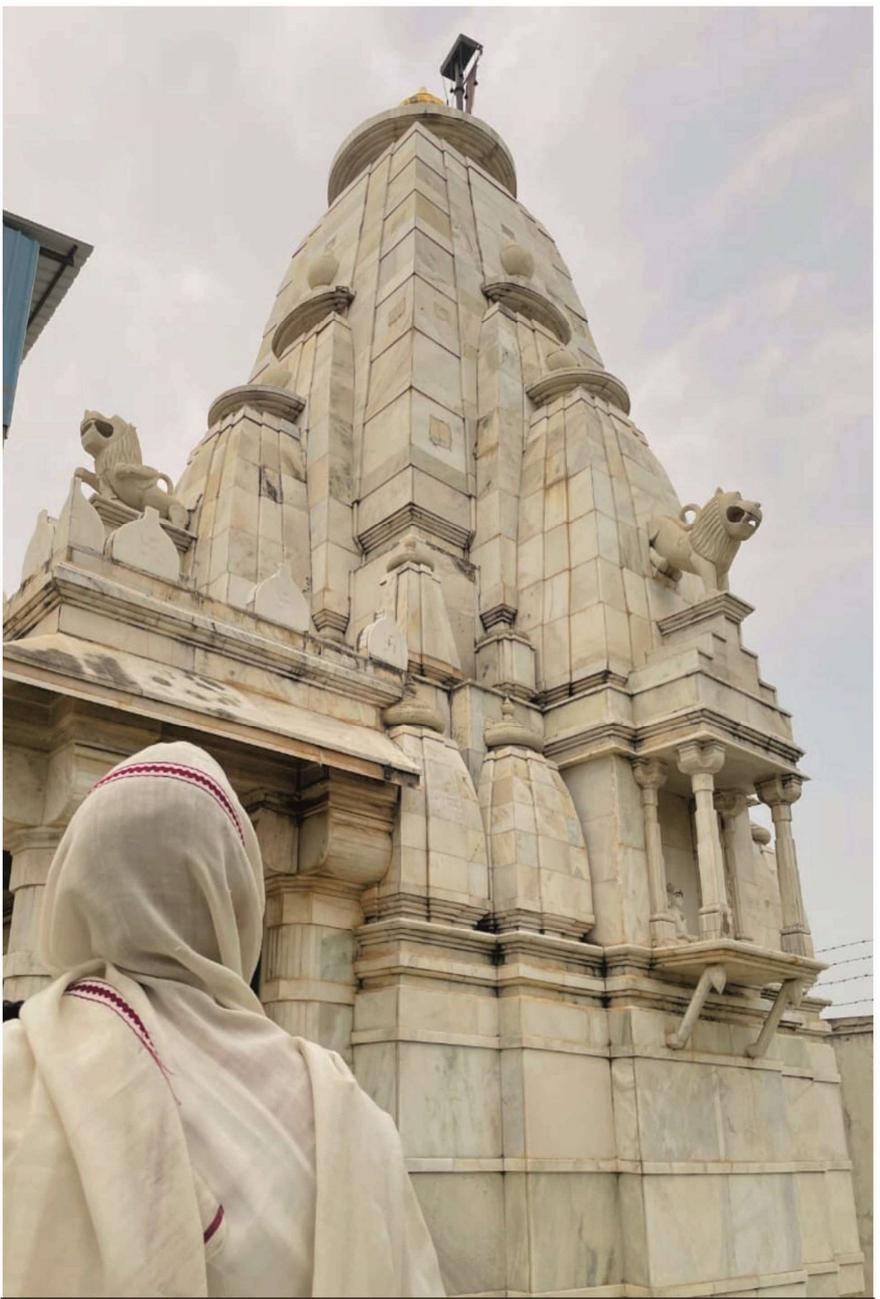
आप केवल गुरु नहीं,
जीवन के प्रत्येक श्वास में समाए वह अखंड प्रकाश हैं
जिसने अंधकार को दिशा में बदला है।

आपके माध्यम से चेतना ने धर्म को जाना,
सत्य को जिया,
अहिंसा को महसूस किया,
और आत्मबल को जगाया।

एकाकीपन से आत्मनिर्भरता की यात्रा में
आप मौन पथप्रदर्शक बनकर साथ रहे।
हर मोड़ पर दिशा दी,
हर भ्रम में स्पष्टता जगाई।

यह संकलन शब्दों का नहीं,
कृतज्ञता का पुष्पांजलि है।
आपके चरणों में विनम्र समर्पण,
जिसने जीवन को केवल सुधारा नहीं,
पुनः गढ़ा है।

शत-शत नमन है उस विराट चेतना को,
जो गुरु रूप में सदा मार्गदर्शक बनकर उपस्थित है।



हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का ... आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का ...



अन्तरा
शब्दशक्ति

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- <https://www.facebook.com/antrashabdshakti/>

Fecbook group:- <https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/>



Antra ShabdShakti Prakeshan

15, नेहरू चौक, मेन रोड वाराणसिक्नी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो. - 9009423393, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com